अध्याय 5

धार्मिक आन्दोलन

इस अध्याय में आप सीखेंगे कि:

- छठीं शताब्दी में वे कौन-कौन सी ऐसी परिस्थितियाँ आई जिसके कारण बौद्ध और जैन धर्म का जन्म हुआ।
- बौद्ध और जैन धर्म से सम्बन्धित सिद्धांत और मानक पुस्तकें, उनकी शिक्षाओं के बारे में जानकारी क्या है।
- बौद्ध एवं जैन के सम्मेलन तथा उनके सम्प्रदाय और उनके विभाजन के कारण क्या थे। इसके साथ-साथ यह जानकारी प्राप्त होगी कि कैसे बौद्ध धर्म का विस्तार पूरी दुनिया में हो गया जबकि जैन धर्म भारत में ही सीमित रहा।

परिचय (Introduction)

छठी शताब्दी ई.पू. के उत्तरार्द्ध में मध्य गंगा के मैदानों में अनेक धार्मिक सम्प्रदायों (Religious Sects) का उदय हुआ, जिनमें जैन और बौद्ध सर्वाधिक महत्वपूर्ण हुए।

जैन धर्म (Jainism)

जैन शब्द संस्कृत के 'जिन' शब्द से बना है, जिसका अर्थ—विजेता होता है, अर्थात् जिन्होंने अपने मन, वाणी एवं काया को जीत लिया हो। जैन साधुओं को निर्ग्रन्थ (बन्धनरहित) कहा गया है। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव या आदिनाथ थे, जिनका जन्म अयोध्या में हुआ था। आदिनाथ ने कैलाश पर्वत पर शरीर का त्याग किया था। ऋषभदेव और अरिष्टनेमि (22वें तीर्थंकर) का उल्लेख ऋग्वेद मिलता है।

23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ काशी के राजा अश्वसेन के पुत्र थे। अपने अनुयायियों (निर्ग्रन्थ) को इन्होंने चातुर्याम शिक्षा या चार आचरण पालने करने को कहा—सत्य (सदा सत्य बोलना), अहिंसा (प्राणियों की हिंसा न करना), अस्तेय (चोरी न करना) तथा अपरिग्रह (सम्पत्ति न रखना)।

महावीर स्वामी

24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी को जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक माना जाता है, जिनका वास्तविक नाम वर्धमान था। इन्होंने 30 वर्ष की अवस्था में अपने अग्रज नन्दिवर्द्धन से आज्ञा लेकर गृहत्याग दिया। बारह वर्ष की कठोर तपस्या के बाद जृम्भिक ग्राम में ऋजुपालिका नदी के किनारे साल वृक्ष के नीचे उन्हें कैवल्य की प्राप्ति हुई।

ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् महावीर केवलिन कहलाए। सभी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के कारण उन्हें जिन (विजेता) कहा गया। तपस्या के रूप में अद्भूत पराक्रम दिखाने के कारण वे महावीर कहलाए। उन्हें निर्ग्रन्थ (बन्धनरहित) के नाम से भी जाना गया। बौद्ध साहित्य में महावीर को निगण्ठनाथ पुत्र भी कहा गया है।

ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् महावीर ने अपना प्रथम उपदेश राजगृह के निकट वितुलांचल पहाड़ी पर मेघकुमार को दिया। जमालि (दामाद) इनका प्रथम शिष्य बना। चम्पा नरेश दधिवाहन की पुत्री चन्दना इनकी प्रथम भिक्षुणी हुई। महावीर के 11 शिष्यों को गणधर कहा गया। महावीर के जीवनकाल में ही दस गणधरों की मृत्यु हो गई, केवल सुधर्मन जीवित बचा।

जैन धर्म की प्रमुख शिक्षाएं

महावीर ने अपने उपदेश लोक भाषा प्राकृत में दिए। देश के अलग-अलग भागों में प्राकृत के अनेक रूप प्रचलित थे। मगध में बोली जाने वाली प्राकृत मागधी कहलाती थी। प्राकृत में ही जैन साहित्य की रचना की गई।

जैन धर्म में संसार को दुःख मूलक माना गया है। मनुष्य जरा वृद्धावस्था तथा मृत्यु से ग्रस्त है। सांसारिक जीवन की तृष्णाएँ व्यक्ति को घेरे रहती हैं। यही दुःख का मूल कारण है। संसार त्याग तथा सन्यास मार्ग ही व्यक्ति को सच्चे मार्ग पर ले जा सकता है।

संसार के सभी प्राणी अपने-अपने संचित कर्मों के अनुसार, फल भोगते हैं। कर्मफल ही जन्म तथा मृत्यु का कारण है।

कर्मफल से छुटकारा पाकर ही व्यक्ति निर्वाण की ओर अग्रसर होता है।

त्रिरत्न

जैन धर्म में कर्मफल से मुक्ति के लिए त्रिरत्न का अनुशीलन आवश्यक माना गया है। जैन धर्म के त्रिरत्न हैं (इनमें आचरण पर सर्वाधिक बल दिया गया है)—सम्यक दर्शन—सत् में विश्वास, सम्यक ज्ञान—सद्रूप का शंकाविहिन तथा वास्तविक ज्ञान, सम्यक आचरण—सांसारिक विषयों से उत्पन्न सुख-दु:ख के प्रति समभाव।

महाव्रत एवं अणुव्रत

सम्यक आचरण के पालन के संदर्भ में पाँच महाव्रतों का पालन अनिवार्य है। पाँच महाव्रतों में चार अहिंसा, अमृषा (झूठ न बोलना), अपरिग्रह (संग्रह न करना) तथा अस्तेय (चोरी न करना) का प्रतिपादन पार्श्वनाथ ने किया था, जबकि पाँचवाँ महाव्रत ब्रह्मचर्य महावीर द्वारा जोड़ा गया था। गृहस्थ जीवन व्यतीत करने वाले जैनियों के लिए भी इन्हीं व्रतों की व्यवस्था है, लेकिन इनकी कठोरता में पर्याप्त कमी की गई है, इसलिए इन्हें अणुव्रत कहा गया है।

सम्यक ज्ञान

जैन दर्शन के अनुसार, सम्यक ज्ञान पाँच प्रकार के होते हैं—मति (इन्द्रिय जनित ज्ञान), श्रुति (श्रवन ज्ञान), अवधि (दिव्य ज्ञान), मन:पर्याय (दूसरे के मन को जान लेना), कैवल्य ज्ञान (सर्वोच्च ज्ञान)। जैन मतानुसार ज्ञान के तीन स्त्रोत हैं—प्रत्यक्ष, अनुमान एवं तीर्थंकरों के वचन।

जीव-अजीव

अजीव (निर्जीव सत्ता) का विभाजन पाँच भागों में किया गया है—पुद्गल, काल, आकाश, धर्म तथा अधर्म। धर्म का तात्पर्य, जो गति का साधन अथवा स्थित है, अधर्म का तात्पर्य, जो स्थिरता का साधन अथवा स्थिति है। पुद्गल का तात्पर्य उस तत्व से है, जिसका संयोग तथा विभाजन किया जा सके।

आत्मा स्वभाविक रूप से उज्जवल, सर्वज्ञाता तथा आनन्दमय है। विश्व में असंख्य आत्माएँ हैं, जो मूलत: समान हैं।

जीवों (जीवनों) और अजीवों (निर्जीव सत्ताओं) के पारस्परिक क्रिया संबंधों के आधार पर विश्व कार्य चलते हैं।

आत्मा की शुद्धि लम्बे समय तक उपवास, अहिंसा और इन्द्रिय निग्रह द्वारा संभव है। अज्ञानता के कारण कर्म जीव की ओर आकर्षित होने लगता है, जिसे आस्रव कहते हैं। कर्म का जीव के साथ संयुक्त हो जाना बन्धन है। आत्मा में कर्म के प्रवाह को रोकना संवर तथा प्रविष्ट कर्म को बाहर निकालने की प्रक्रिया निर्जरा कहलाती है।

अनन्त चतुष्ट्य

जब जीव से कर्म का अवशेष बिल्कुल समाप्त हो जाता है, तब वह (कैवल्य) मोक्ष की प्राप्ति कर लेता है। ऐसी स्थिति में आत्मा अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त वीर्य तथा अनन्त आनन्द की स्थिति में होती है, जिसे अनन्त चतुष्ट्य कहा गया है।

कैवल्य

जैन धर्म में सिर्फ संघ के सदस्यों के लिए कैवल्य का प्रावधान है, सामान्य गृहस्थों के लिए नहीं। सामान्य गृहस्थों को सन्यासी या भिक्षु के जीवन में प्रवेश करने के पूर्व 11 कोटियों से गुजरना पड़ता है। जैन धर्म में पुनर्जन्म, कर्मवाद, मोक्ष एवं आत्मा की सत्ता को स्वीकार किया गया है। यह वेद की अपौरूषेयता तथा ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार करता है। यह वर्णव्यवस्था की निन्दा नहीं करता है।

संलेखना

जैन धर्म में अहिंसा एवं काया क्लेश पर अत्यधिक जोर दिया गया है। काया क्लेश के अंतर्गत उपवास द्वारा आत्महत्या का विधान है। इस पद्धति को संलेखना एवं निषिद्धि कहा जाता है।

महावीर ने अपना उपदेश प्राकृत (अर्द्ध मागधी) भाषा में दिया। इस धर्म के मुख्य (क्रोड) सिद्धांत को अनेकान्तवाद, स्यादवाद, सप्तमंगी सिद्धांत, सप्रतिध सिद्धांत अथवा नयवाद के नाम से जाना जाता है। स्यादवाद ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धांत है।

जैन संघ एवं सम्प्रदाय

महावीर की मृत्यु के पश्चात् केवल एक गणधर सुधर्मन जीवित बचा, जो जैन संघ का प्रथम अध्यक्ष बना। सुधर्मन की मृत्यु के बाद जम्बूस्वामी 44 वर्षों तक जैन संघ का अध्यक्ष रहा, जो अन्तिम केवलिन था। लगभग 300 ई.पू. के आस-पास मगध में 12 वर्षों का भीषण अकाल पड़ा, जिसके कारण भद्रबाहु शिष्यों के साथ दक्षिण चले गए। बचे हुए साधु स्थूलभद्र के नेतृत्व में वहीं बने रहे। स्थूलभद्र के अनुयायी श्वेताम्बर तथा भद्रबाहु के अनुयायी दिगम्बर कहलाए।

तालिका 5.1: श्वेताम्बर एवं दिगम्बर में अंतर

श्वेताम्बर	दिगम्बर
मोक्ष प्राप्ति के लिए वस्त्र त्यागना आवश्यक नहीं	मोक्ष के लिए वस्त्र त्यागना आवश्यक
स्त्रियाँ निर्वाण की अधिकारी	स्त्रियों को निर्वाण संभव नहीं
कैवल्य प्राप्ति के बाद भी लोगों को भोजन की आवश्यकता	कैवल्य प्राप्ति के बाद भोजन की आवश्यकता नहीं
श्वेताम्बर मतानुसार महावीर विवाहित थे	दिगम्बर मतानुसार महावीर अविवाहित थे
19वें तीर्थंकर स्त्री थी	19वें तीर्थंकर पुरुष थे

जैन धर्म का प्रचार

महावीर स्वामी के समय में जैन धर्म का सर्वाधिक प्रसार हुआ। महावीर के समकालीन बिम्बिसार, चण्डप्रद्योत, अजातशत्रु, उदयिन, दधिवाहन एवं चेटक जैन धर्मानुयायी थे। महापद्मानन्द भी जैनी थे। मौर्य शासक चन्द्रगुप्त मौर्य एवं सम्प्रति जैन धर्मानुयायी थे। सम्प्रति ने जैन आचार्य सुहास्ति से शिक्षा ग्रहण की थी।

चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में पाटलिपुत्र में प्रथम जैन संगीति का आयोजन हुआ। कलिंग नरेश खारवेल कट्टर जैन अनुयायी था। उसके हाथी गुम्फा अभिलेख में जैन धर्म का प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य मिलता है। उदयगिरि पहाड़ी में खारवेल ने जैन साधुओं के लिए एक गुफा का निर्माण करवाया।

पूर्व मध्यकाल में राष्ट्रकूट, गंग, गुजरात के चालुक्य एवं चन्देल शासकों ने जैन धर्म को प्रश्रय दिया। राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष जैन धर्म का अनुयायी था। गंग वंश के राजा राजमल चतुर्थ का मंत्री एवं सेनापति चामुण्डराय ने 974 ई. में श्रवणबेलगोला के पास एक बाहुबली की मूर्ति का निर्माण करवाया, जो गोमतेश्वर की मूर्ति कहलाती है। यहां पर प्रत्येक 12 वर्ष में महामस्तकाभिषेक किया जाता है।

चौहान शासक पृथ्वीराज ने जैन विद्वान अर्णोराज धर्मघोष सूरी को आश्रय दिया। मध्यकाल में मुहम्मद-बिन-तुगलक ने जिनसेन सूरी तथा मुगल बादशाह अकबर ने हरि विजय सूरी नामक विद्वान को आश्रय दिया। महावीर की शिक्षाओं को साहित्यों में संकलित करने के लिए दो जैन सभाओं का भी आयोजन किया गया।

तालिका 5.2: जैन संगीतियाँ

सम्मेलन वर्ष	स्थान	अध्यक्ष	मुख्य बिन्दु
प्रथम (322-298 ई.पू.)	पाटलिपुत्र	स्थूलभद्र	12 अंगों का संकलन
द्वितीय (512 ई.)	वल्लभि	देवार्धि क्षमाश्रमण	11 अंगों को लिपिबद्ध किया गया

जैन साहित्य

जैन साहित्य प्राकृत एवं संस्कृत भाषा में मिलते हैं। प्राचीनतम जैन ग्रन्थ पूर्व कहे जाते हैं, पूर्व की संख्या 14 है। जैन साहित्य को आगम (सिद्धांत) कहा जाता है। इसके अंतर्गत 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेदसूत्र, 4 मूलसूत्र एवं अनुयोग सूत्र आते हैं। दूसरे जैन सम्मेलन में 11 अंगों को लिपिबद्ध किया गया तथा 12वें अंग दृष्टिवाद को नष्ट मान लिया गया।

जैन ग्रन्थ आचारांग सूत्र में जैन भिक्षुओं के आचार नियम, भगवती सूत्र में महावीर के जीवन, नाय धम्मकष सत्त में महावरी की शिक्षाओं का संग्रह तथा उपवासदसाओं में उपासकों के जीवन सम्बंधी नियम दिए गए हैं। कुवलयमाया में हूण शासक तोरमाण तथा भद्रबाहु चरित से चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्यकाल की घटनाओं पर प्रकाश पड़ता है।

भद्रबाहु लिखित कल्पसूत्र, हरिभद्र सूरी कृत अनेकान्त विजय एवं धर्मबिन्दु तथा सर्वनन्दी कृत लोकविभंग प्रमुख जैन साहित्य हैं। संस्कृत में भद्रबाहु द्वारा लिखित कल्पसूत्र में तीर्थंकरों का जीवन चरित है।

तालिका 5.3: जैन धर्म के तीर्थंकर एवं उनके प्रतीक

तीर्थंकर	प्रतीक	तीर्थंकर	प्रतीक
1. ऋषभदेव	वृषभ	2. अजितनाथ	गज
3. सम्भवनाथ	अश्व	4. अभिनन्दन नाथ	कपि
5. सुमतिनाथ	क्रौंच	6. पद्मप्रभु	पद्म
7. सुपार्श्वनाथ	स्वास्तिक	8. चन्द्रप्रभु	चन्द्र
9. सुविधिनाथ	मकर	10. शीतलनाथ	श्रीवत्स
11. श्रेयांसनाथ	गैण्डा	12. पूज्यनाथ	महिष
13. विमलनाथ	वाराह वाराह	14. अनन्तनाथ	श्येन
15. धर्मनाथ	वज्र	16. शान्तिनाथ	मृग
17. कुन्थुनाथ	अज	18. अरहनाथ	मीन
19. मल्लिनाथ	कलश	20. मुनिसुव्रत	कूर्म
21. नेमिनाथ	नीलोत्पल	22. अरिष्टनेमि	शंख
23. पार्श्वनाथ	सर्पफण	24. महावीर	सिंह

जैन धर्म के पतन के कारण

अहिंसा पर अत्यधिक बल, आत्मपीड़न, कठोर व्रत एवं तपस्या पर बल, जाति व्यवस्था के दर्शन को बनाए रखना, ब्राह्मण धर्म से पूर्णतः पृथक नहीं करना, बौद्ध धर्म का विस्तार एवं ब्राह्मण धर्म का पुनरूत्थान जैन धर्म के पतन के मुख्य कारण थे।

बौद्ध धर्म (Buddhism)

बौद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध थे। बुद्ध का अर्थ 'प्रकाशमान' अथवा 'जाग्रत' होता है। बुद्ध का जन्म शाक्यों की राजधानी कपिलवस्तु के समीप लुम्बिनी में हुआ था। उनका नाम सिद्धार्थ रखा गया। उनका गोत्रीय अभिधान गौतम था, जिसका सर्वत्र बौद्ध साहित्य में उल्लेख मिलता है।

गौतम बुद्ध के जन्म पर कालदेव तथा कौण्डिन्य नामक ब्राह्मण ने भविष्यवाणी की थी कि यह बालक चक्रवर्ती राजा या सन्यासी होगा। गौतम बुद्ध के जीवन संबंधी चार दृश्य अत्यन्त प्रसिद्ध हैं, जिन्हें देखकर उनके मन में वैराग्य की भावना उठी—

1. वृद्ध व्यक्ति 2. बीमार व्यक्ति 3. मृत व्यक्ति
4. प्रसन्न मुद्रा में सन्यासी।

29 वर्ष की अवस्था में उन्होंने गृहत्याग दिया, जिसे बौद्ध ग्रन्थों में महाभिनिष्क्रमण कहा गया है। बुद्ध सर्वप्रथम अनुपिय नामक आम्र उद्यान में कुछ दिन रूके। वैशाली के समीप उनकी मुलाकात सांख्य दर्शन के आचार्य आलार कलाम तथा राजगृह के समीप रूद्रक रामपुत्र से हुई। ये दोनों बुद्ध के प्रारंभिक गुरू थे।

छः वर्ष तक अथक परिश्रम एवं घोर तपस्या के बाद 35 वर्ष की आयु में 'वैशाख पूर्णिमा' की एक रात पीपल वृक्ष के नीचे निरंजना (पुनपुन) नदी के तट पर सिद्धार्थ को ज्ञान प्राप्त हुआ, इसी दिन से वे तथागत कहलाए। ज्ञान प्राप्ति के बाद गौतम 'बुद्ध' के नाम से प्रसिद्ध हुए। इस घटना को निर्वाण कहा गया है।

धर्म-चक्र-प्रवर्तन

उरूवेला से बुद्ध सारनाथ (ऋषि पत्तनम एवं मृतदाव)आए। यहाँ उन्होंनें पाँच ब्राह्मण संन्यासियों को अपना प्रथम उपदेश दिया, जिसे बौद्ध ग्रन्थों में धर्म-चक्र-प्रवर्तन के नाम से जाना जाता है। बौद्ध संघ में प्रवेश सर्वप्रथम यहीं से प्रारंभ हुआ।

ज्ञान प्राप्ति के 8वें वर्ष वैशाली के लिच्छवियों ने बुद्ध को वैशाली आमंत्रित किया तथा कूटाग्रशाला नामक विहार दान में दिया।

अपने शिष्य आनन्द के कहने पर बुद्ध ने वैशाली में महिलाओं को संघ में प्रवेश की अनुमति दी। प्रजापति गौतमी पहली भिक्षुणी थी। गौतमी की पुत्री नन्दा, बुद्ध की पत्नी यशोधरा, वैशाली की नगरवधू आम्रपाली तथा बिम्बिसार की पत्नी क्षेमा भी बुद्ध की शिष्या बन गई।

ज्ञान प्राप्ति के 20 वें वर्ष बुद्ध श्रावस्ती पहुँचे तथा वहाँ अंगुलिमाल नामक डाकू को अपना शिष्य बनाया।

बुद्ध ने अपने जीवन के सर्वाधिक उपदेश कोसल देश की राजधानी श्रावस्ती में दिए। बुद्ध ने अन्तिम उपदेश कुशीनगर में 'सुभद्द' को दिया था।

महापरिनिर्वाण

अपने शिष्य चुन्द के यहाँ सूकरमाद्दव भोज्य सामग्री खाने से बुद्ध अतिसार रोग से पीड़ित हो गए। 80 वर्ष की अवस्था में इनकी मृत्यु हो गई। इसे बौद्ध परम्परा में महापरिनिर्वाण के नाम से जाना जाता है।

बुद्ध की मृत्यु के बाद उनके अस्थि अवशेष के आठ भाग किए गए तथा प्रत्येक पर स्तूप बनवाए गए।

बौद्ध धर्म की शिक्षाएं

बुद्ध ने आम जनता की भाषा पालि में उपदेश दिए। उनके अनुसार सृष्टि दुःखमय, क्षणिक एवं आत्मविहीन है। वे कर्म एवं पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं तथा ईश्वर एवं अपौरूषेय वेद की सत्ता को अस्वीकार करते हैं। बौद्ध धर्म की मुख्य शिक्षा जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था को भी अस्वीकार करना है। बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाओं को प्रतीकों के माध्यम से दर्शाने की परंपरा रही है। जैसे, (जन्म—कमल एवं साँड), (गृहत्याग—घोड़ा), (ज्ञान—बोधिवृक्ष), (निर्वाण—पदचिन्ह) तथा (मृत्यु—स्तूप)।

बौद्ध दर्शन के अनुसार मानव शरीर भौतिक तथा मानसिक तत्वों के पाँच स्कन्धों से निर्मित है—रूप, संज्ञा, वेदना, विज्ञान एवं संस्कार। चार आर्य सत्य बौद्ध धर्म के मूल सिद्धान्त हैं। ये हैं—दुःख है, दुःख का कारण है, दुःख का निदान है और दुःख निदान के उपाय हैं।

अष्टांगिक मार्ग

गौतम बुद्ध ने चतुर्थ आर्य सत्य में दुःख निरोध का उपाय बताया। इसे 'दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा' कहा जाता है। इसे 'मध्यमा प्रतिपदा' या मध्यम मार्ग भी कहते हैं। उनके इस मध्यम प्रतिपद में आठ सोपान हैं, इसलिए इसे अष्टांगिक मार्ग भी कहते हैं।

इसके आठ सोपान हैं—सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्मांत, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति एवं सम्यक् समाधि।

प्रतीत्य समुत्पाद

प्रतीत्य समुत्पाद बुद्ध के उपदेशों का सार एवं उनकी सम्पूर्ण शिक्षाओं का आधार स्तंभ है। प्रतीत्यसमुत्पाद का शब्दिक अर्थ है—प्रतीत्य (किसी वस्तु के होने पर) समुत्पाद (किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति)। प्रतीत्यसमुत्पाद के 12 क्रम हैं, जिन्हें द्वादश निदान कहा जाता है।

प्रतीत्यसमुत्पाद, बौद्ध धर्म का कारण—कार्य सिद्धांत है। प्रतीत्यसमुत्पाद में ही अन्य सिद्धान्त जैसे, क्षणभंगवाद तथा नैरात्मवाद आदि समाहित हैं। दुःख के कारणों को प्रतीत्यसमुत्पाद (इसके प्राप्त होने से यह उत्पन्न होता है) कहा गया है। इसे हेतु परंपरा भी कहा जाता है।

बौद्ध धर्म के अनुसार, मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य है—निर्वाण प्राप्ति। निर्वाण का अर्थ है—दीपक का बुझ जाना अर्थात् जीवन-मरण के चक्र से मुक्ति।

त्रिरत्न

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न हैं—बुद्ध, संघ और धम्म। बौद्ध दर्शन के अनुसार, यह सृष्टि विभिन्न चक्रों में विभाजित है। इसमें एक बुद्ध चक्र तो दूसरा शून्य चक्र होता है। हम बुद्ध चक्र में हैं।

दस शील

बौद्ध धर्म में निर्वाण प्राप्ति के लिए सदाचार तथा नैतिक जीवन पर अत्यधिक बल दिया गया है। दस शीलों का अनुशीलन नैतिक जीवन का आधार है। इन दस शीलों को शिक्षापद भी कहा गया है, ये हैं—अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करना), अपरिग्रह (धन संचय न करना), ब्रह्मचर्य, असमय भोजन न करना, व्यभिचार न करना, मद्य सेवन न करना, आरामदायक शय्या का त्याग तथा आभूषणों का त्याग।

बौद्ध संघ

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न बुद्ध, धम्भ व 'संघ' का संघ महत्वपूर्ण अंग है। सारनाथ में ही बुद्ध ने घोषित किया कि धम्म और संघ के निर्धारित नियम ही उनके उत्तराधिकारी हैं। यह विवरण महापरिनिर्वाण सुत्त में मिलता है।

स्त्रियों को भी संघ में प्रवेश का अधिकार प्राप्त था। इसमें प्रवेश के लिए 15 वर्ष या उससे अधिक उम्र अनिवार्य थी। बौद्ध संघ में चोर, हत्यारों, ऋणी व्यक्तियों, राजा के सेवक, दास तथा रोगी व्यक्तियों का प्रवेश वर्जित था।

बौद्ध संघ में प्रवेश को उपसम्पदा कहा जाता था। संघ की सभा में प्रस्ताव को नत्ति कहा जाता था। प्रस्ताव पाठ अनुसावन अथवा कम्मवाचा कहा जाता था। किसी पवित्र अवसर पर भिक्षुओं के एकत्र होकर चर्चा करने को उपोसथ कहा जाता था। वर्षा ऋतु के दौरान मठों में प्रवास के समय भिक्षुओं द्वारा अपराध स्वीकारोक्ति समारोह पवरन कहलाता था।

बौद्धों के लिए महीने के चार दिन अमावस्या, पूर्णिमा और दो चतुर्थी दिवस उपवास के दिन होते थे। बौद्धों का सबसे पवित्र एवं महत्वपूर्ण दिन या त्योहार वैशाख की पूर्णिमा है, जिसे 'बुद्ध पूर्णिमा' के नाम से जाना जाता है। इस दिन का अत्यधिक महत्व इसलिए है, क्योंकि इसी दिन बुद्ध का जन्म, ज्ञान की प्राप्ति एवं महापरिनिर्वाण की प्राप्ति हुई।

स्तूप, चैत्य एवं विहार

स्तूप का शाब्दिक अर्थ है—'किसी वस्तु का ढेर'। स्तूप का विकास संभवत: मिट्टी के ऐसे चबूतरे से हुआ, जिसका निर्माण मृतक की चिता के ऊपर अथवा मृतक की चुनी हुई अस्थियों को रखने के लिए किया जाता था। स्तूपों को मुख्यत: चार भागों में बाँटा जा सकता है—

1. शारीरिक स्तूप प्रधान स्तूप होते थे, जिसमें बुद्ध के शरीर, धातु, केश और दन्त आदि को रखा जाता था।
2. पारिभोगिक स्तूप इसमें महात्मा बुद्ध के द्वारा उपयोग की गई वस्तुओं, जैसे, भिक्षापात्र, चीवर, संघाटी, पादुका आदि को रखा जाता था।
3. उद्देशिका स्तूप ऐसे स्तूप होते थे, जिनका सम्बन्ध बुद्ध के जीवन से जुड़ी घटनाओं की स्मृति से जुड़े स्थानों से था।
4. पूजार्थक स्तूप ऐसे स्तूप होते थे, जिनका निर्माण बुद्ध की श्रद्धा के वशीभूत धनवान व्यक्तियों द्वारा तीर्थ स्थानों पर होता था।

स्तूप के महत्वपूर्ण हिस्से इस प्रकार होते हैं—

- वेदिका (रेलिंग) का निर्माण स्तूप की सुरक्षा के लिए होता था।
- मेधि (कुर्सी) वह चबूतरा जिस पर स्तूप का मुख्य हिस्सा आधारित होता था।
- अण्ड स्तूप का अर्द्ध गोलाकार हिस्सा होता था।
- हर्मिका स्तूप के शिखर पर अस्थि की रक्षा के लिए।
- छत्र धार्मिक चिन्ह का प्रतीक।
- यष्टि छत्त को सहारा देने के लिए होता था।
- सोपान मेधि पर चढ़ने-उतरने हेतु सीढ़ी।

चैत्य इसका शब्दिक अर्थ है—चिता संबंधी। शवदाह के पश्चात् बचे हुए अवशेषों को भूमि में गाड़कर उनके ऊपर जो समाधियाँ बनाई गईं, उन्हीं को प्रारंभ में चैत्य या स्तूप कहा गया।

विहार—बौद्ध चैत्यों या स्तूपों के पास भिक्षुओं के रहने के लिए आवास बनाया जाता था, जिसे विहार कहा जाता था। चैत्यों के उपासना स्थल में परिवर्तित हो जाने के कारण उसके समीप ही विहार का निर्माण होने लगा।

बौद्ध धर्म का प्रचार

बुद्ध की मृत्यु के पश्चात् बौद्ध धर्म के विचारों का प्रचार-प्रसार करने के लिए चार बौद्ध संगीतियों का आयोजन किया गया।

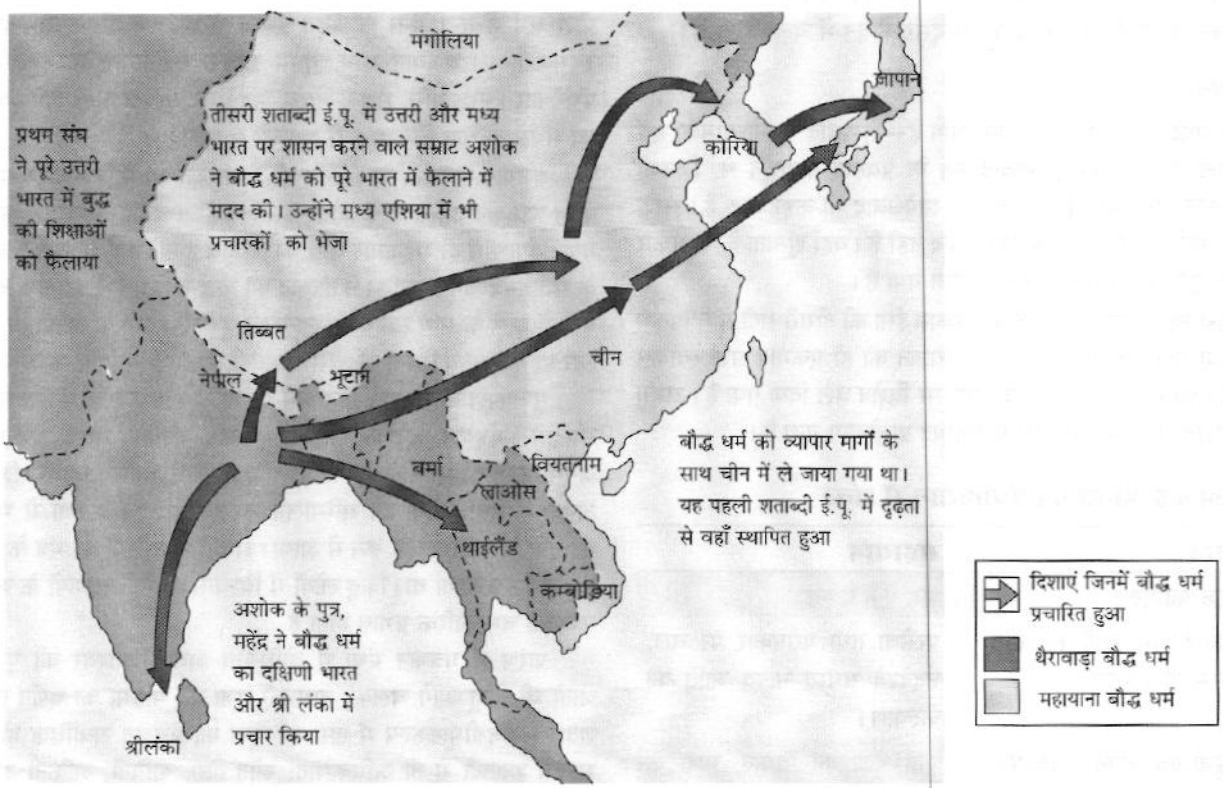

चित्र 5.1: बौद्ध धर्म का प्रचार

तालिका 5.4: बौद्ध संगीतियाँ

संगीति	स्थान	समय	शासनकाल	अध्यक्ष	कार्य
प्रथम	सप्तपर्णीगुफा (राजगृह)	483 ई.पू.	अजातशत्रु	महाकस्सप	बुद्ध के उपदेशों को सुत्तपितक तथा विनयपिटक में अलग-अलग संकलित किया गया।
द्वितीय	वैशाली	383 ई.पू.	कालाशोक	साबकमीर (सर्वकामनी)	भिक्षुओं में मतभेद के कारण स्थविर एवं महासंघिक में विभाजन।
तृतीय	पाटलिपुत्र	250 ई.पू.	अशोक	मोग्गलिपुत्त तिस्स	अभिधम्मपिटक का संकलन।
चतुर्थ	कुण्डलवन (कश्मीर)	72 ई.	कनिष्क	वसुमित्र	बौद्ध, संघ का हीनयान एवं महायान सम्पद्रायों में विभाजन।

हीनयान

हीनयान के प्रमुख सम्प्रदाय हैं—वैभाषिक तथा सौत्रान्त्रिक। वैभाषिक सम्प्रदाय की उत्पत्ति मुख्य रूप से कश्मीर में हुई। विभाषशास्त्र पर आधारित होने के कारण इसे वैभाषिक नाम दिया गया है।

सौत्रान्तिक मत का मुख्य आधार सूत्र (सुत्त) पिटक है। अत: इसे सौत्रान्तिक कहा जाता है। यह चित्त तथा बाह्य जगत दोनों की सत्ता में विश्वास करते हैं। सौत्रान्तिक सम्प्रदाय के प्रवर्तक कुमारलात थे।

स्थविरवादी, सर्वास्तिवादी तथा समित्या हीनयान के अन्य प्रमुख उपसम्प्रदाय हैं। स्थविरवादी परंपरागत धर्म था। सर्वास्तिवादी के अनुसार, दृश्य जगत के धर्म पूर्णत: क्षणिक हैं। समित्या एक ऐसी आत्मा की परिकल्पना करता है,जो एक जीवन से दूसरे जीवन में चली जाती है।

महायान

महायान बौद्ध सम्प्रदाय के दो मुख्य भाग हैं—शून्यवाद या माध्यमिका एवं विज्ञानवाद या योगाचार। शून्यवाद मत के प्रवर्तक नागार्जुन थे, जिनकी प्रसिद्ध कृति माध्यमिक कारिका है, इसे सापेक्षवाद भी कहा जाता है। इसके अनुसार, प्रत्येक वस्तु का अर्थ विनाशवाद नहीं है। यहाँ शून्यता के दो प्रकार अस्तित्व शून्यता एवं विचार शून्यता माना गया है।

विज्ञानवाद (योगाचार) मत का विकास ईसा की तीसरी सदी में मैत्रेयनाथ द्वारा किया गया। यह मत चित्त अथवा विज्ञान को ही एकमात्र सत्ता स्वीकार करता है। इसमें योगाभ्यास एवं आचरण पर विशेष बल दिया गया है। असंग द्वारा लिखित सूत्रलंकार इस धर्म से संबंधित प्राचीनतम ग्रन्थ है।

तालिका 5.5: हीनयान एवं महायान में अंतर

हीनयान	महायान
बुद्ध एक महापुरुष	बुद्ध एक देवता
व्यक्तिवादी धर्म, सभी को अपने प्रयत्नों से मोक्ष प्राप्त करना चाहिए।	परसेवा तथा परोपकार पर बल, उद्देश्य समस्त मानव जाति का कल्याण।
मूर्ति पूजा एवं भक्ति में विश्वास नहीं।	मूर्ति पूजा का विधान, मोक्ष के लिए बुद्ध की कृपा।
साधन पद्धति अत्यन्त कठोर, भिक्षु जीवन का हिमायती	सिद्धांत सरल एवं सुलभ, भिक्षुओं तथा उपासकों को भी महत्व।
आदर्श 'अर्हत' पद को प्राप्त करना।	आदर्श 'बोधिसत्व' है।
साहित्य पाली भाषा में	साहित्य संस्कृत भाषा में।

वज्रयान सम्प्रदाय

बौद्ध धर्म में तन्त्र-मन्त्र के बढ़ते प्रभाव से वज्रयान नामक सम्प्रदाय का उद्भव हुआ। वज्रयान साधु, गुह्य साधना का प्रयोग करने लगे और पंचमकार (मद्य, माँस, मैथुन, मत्स्य, मुद्र) की साधना करने लगे। वज्रयान का सबसे अधिक विकास 8वीं शताब्दी में हुआ।

वज्रयान सम्प्रदाय के अंतर्गत ही 10वीं शताब्दी में एक अन्य सम्प्रदाय काल चक्रयान अस्तित्व में आया, इसमें सर्वोच्च देवता कालचक्र को माना गया। बंगाल में ही सहजयान पन्थ का विकास हुआ। 8वीं शताब्दी में कश्मीर के सर्वज्ञमित्र नामक व्यक्ति ने तंत्रवाद को बौद्ध सम्प्रदाय में अपनाया था। इस पन्थ में पुरुष के साथ स्त्री की कल्पना भी जुड़ गई। तारा के अतिरिक्त निचले स्तर पर कुछ अन्य स्त्रियाँ थीं, जैसे—मातंगी, पिशाची, योगिनी, डाकनी आदि।

गुप्तकाल के पश्चात् बौद्ध धर्म पर तान्त्रिक प्रभाव के कारण महायान संप्रदाय—मंत्रयान, बज्रयान, सहजपान आदि का रूप धारण कर लेता है जनसाधारण की धार्मिक भावना की तुष्टि के लिए, विविध धार्मिक क्रियायों, अनुष्ठानों गूढ़क्रियायों को सम्मिलित करना पड़ा। इन कारणों से महायान का नया रूप मंत्रयान के रूप में आया। अर्थहीन धरणियों को मंत्र के रूप में प्रयुक्त किया जाता था। किंतु लोगों में विश्वास था कि धरणियों के जप एंव पाठ का चमत्कारिक प्रभाव होता है

प्रारंभ में मंत्रयान ग्रंथों में बोधिसत्व अवलोकितेश्वर की पूजा की जाती थी किंतु आगे चलकर तारा की पूजा की महिमा का वर्णन है छठी शताब्दी मंजूश्रीमूलकल्प में तारा की पूजा का प्रचलन सर्वाधिक हो गया। सातवीं शताब्दी से तो अधिकांशत: स्रोत तारा, योगिनी, अकिनी आदि से ही संबंधित हैं।

बौद्ध साहित्य

महात्मा बुद्ध के परिनिर्वाण के उपरांत आयोजित विभिन्न बौद्ध संगीतियों में संकलित किए गए त्रिपिटक सम्भवत: सर्वाधिक प्राचीन धर्मग्रन्थ हैं। त्रिपिटक—सुत्तपिटक, विनयपिटक एवं अभिधम्मपिटक।

सुत्तपिटक सुत्त का शब्दिक अर्थ है—धर्मोपदेश। यह पिटक पाँच निकायों में विभाजित है—

1. **दीर्घनिकाय**—गद्य एवं पद्य दोनों में रचित इस निकाय में अन्य धर्मों के सिद्धांतों का खण्डन तथा बौद्ध धर्म के सिद्धांतों का समर्थन किया गया है।
2. **मज्झिम निकाय**—इसमें महात्मा बुद्ध को कहीं साधारण मनुष्य तो कहीं अलौकिक शक्ति वाले दैव रूप में वर्णित किया गया है।
3. **संयुक्त निकाय**—गद्य एवं पद्य दोनों शैलियों के प्रयोग वाला यह निकाय अनेक संयुक्तों का संकलन मात्र है।
4. **अंगुत्तर निकाय**—इसमें महात्मा बुद्ध द्वारा भिक्षुओं को उपदेश में कही जाने वाली बातों का वर्णन है। इसमें छठी शताब्दी ई.पू. के सोलह महाजनपदों का उल्लेख मिलता है।
5. **खुद्दक निकाय**—इसे कई ग्रंथों का संकलन माना जाता है—यथा—धम्मपद, विभानवत्थु, सुत्तनिपात, थेरीगाथा, जातक आदि।

विनियपिटक—इसमें बौद्ध मठों में रहने वाले भिक्षु-भिक्षुणियों के अनुशासन संबंधी नियम दिए गए हैं। बौद्ध संघ की कार्य-प्रणाली की व्यवस्था भी इसी ग्रन्थ में उल्लिखित है। यह पतिमोक्ख, सुत्तविभंग खन्धक तथा परिवार में विभक्त है।

अभिधम्मपिटक—इसमें महात्मा बुद्ध के उपदेशों एवं सिद्धान्तों तथा बौद्ध मतों की दार्शनिक व्याख्या की गई है। एक मान्यता के अनुसार इस पिटक का संकलन अशोक के समय में सम्पन्न तृतीय बौद्ध संगीति में मोग्गलिपुत्त तिस्स ने किया।

त्रिपिटकों के अतिरिक्त कुछ अन्य बौद्ध ग्रन्थ भी पालि भाषा में लिखे गए हैं। ये हैं—

- **मिलिन्दपन्हों**—इससे ईसा की प्रथम दो शताब्दियों के भारतीय जनजीवन के विषय में जानकारी मिलती है। इसमें यूनानी शासक मिनाण्डर एवं बौद्ध भिक्षु नागसेन के बीच बौद्ध मत पर वार्तालाप का वर्णन है।
- **दीपवंश**—लगभग चतुर्थ शताब्दी ई. में रचित सिंहल द्वीप के इतिहास पर प्रकाश डालने वाला यह पहला ग्रन्थ है।
- **महावंश**—मदन्त महानाम द्वारा संभवत: 5वीं एवं 6ठीं शताब्दी ई. में रचित इस ग्रन्थ में मगध के राजाओं की क्रमबद्ध सूची मिलती है।
- **महावस्तु**—यह विनयपिटक से संबंधित ग्रन्थ है।

बौद्ध ग्रन्थ

अश्वघोष ने *बुद्धचरित, सौन्दरानन्द, सारिपुत्र प्रकरण, सूत्रलंकार, वज्रसूची* आदि ग्रन्थों की रचना की। सौनन्दरानन्द में बुद्ध के चचेरे भाई सौन्दरानन्द के सन्यास लेने तथा बौद्ध धर्म में दक्षित होने का विवरण है। सारिपुत्र प्रकरण में बुद्ध के शिष्य सारिपुत्र के बौद्ध धर्म में दीक्षित होने का नाटकीय विवरण है। वसुबन्धु की *अभिधर्मकोष*, असंग का *महायान सूत्रलंकार*, आर्यदेव की *चतु:शतिका*, दिङ नाग का *प्रमाण समुच्चय*, शान्तिदेव का *शिक्षा समुच्चय* अन्य बौद्ध ग्रन्थ हैं।

बौद्ध धर्म के पतन के कारण

बौद्ध धर्म के पतन के कारण निम्नलिखित हैं—

- बौद्ध धर्म में कर्मकाण्डों का प्रारंभ।
- बौद्ध भिक्षुओं का आम लोगों के जीवन से दूर जाना।
- मूर्तिपूजा का प्रारंभ, भक्तों से भारी मात्र में दान लेना प्रारंभ।
- ब्राह्मण धर्म का पुनरूत्थान।
- बुद्ध को ब्राह्मणों ने विष्णु का अवतार मानकर वैष्णव धर्म में समाहित कर लिया।
- बौद्ध विहारों में कुरीतियाँ।
- कुछ शासकों का बौद्ध विरोधी दृष्टिकोण।

तालिका 5.6: बौद्ध एवं जैन मत में तुलना

समानता	असमानता
1. दोनों के संस्थापक क्षत्रिय कुल के थे।	बौद्ध निर्वाण इसी जीवन में संभव मानते हैं, जबकि जैन शरीर में मुक्ति के पश्चात् ही इसे संभव मानते हैं।
2. दोनों में वेदों की प्रमाण्यता के प्रति अनास्था है।	बौद्ध मत मुक्ति हेतु मध्य मार्ग का उपदेश देता है, जबकि जैन कठोर साधना पर बल देता है।
3. कर्मकाण्डों के फली-भूत होने का निषेध किया गया है। कर्म व पुनर्जन्म दोनों मानते हैं।	बुद्ध ने जाति प्रथा की कठोर निन्दा की है, जबकि महावीर ने नहीं।
4. शूद्रों व महिलाओं के द्वारा मोक्ष प्राप्ति की संभावना का विरोध किया गया।	महावीर ने बुद्ध की अपेक्षा अहिंसा व अपरिग्रह पर अधिक बल दिया है।

अन्य सम्प्रदाय (Other Sects)

बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार, छठी सदी ई.पू. में भारत में लगभग 62 सम्प्रदाय थे, जिनमें कुछ प्रमुख सम्प्रदाय निम्नलिखित थे—

तालिका 5.7: छठी सदी ई.पू. के प्रमुख सम्प्रदाय

सम्प्रदाय	संस्थापक	मुख्य विचार
भौतिकवादी	अजितकेसकम्बलिन	इसका मत था कि मृत्यु के बाद कुछ भी शेष नहीं बचता। अच्छे या बुरे कर्मों का कोई फल नहीं होता।
अक्रियावादी	पूरणकश्यप	कर्म और पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करते।
आजीवक	मक्खलिपुत्र गोशाल	इनका मत था कि आत्मा का अनेकानेक पुनर्जन्मों के अटलचक्र से गुजरना ही पड़ता है।
नियतिवादी पकुध कच्चायन	पकुध कच्चायन	संसार में न कोई किसी को मारता है और न ही कोई मारा जाता हैं सब कुछ पूर्व से ही निश्चित है।
अनिश्चियवादी या संदेहवादी	संजयवेलट्ठिपुत्तं	जीवन संबंधी प्रत्येक प्रश्न पर इनको अनिश्चया संदेह था यथा—न तो यह कहा जा सकता है कि स्वर्ग या नरक है या फिर नहीं।

अध्याय सार संग्रह

- जैन व बौद्ध धर्म को नास्तिक इसलिए माना जाता है कि वे वेदों की प्रामाणिकता में विश्वास नहीं करते।
- ऋग्वैदिक कालीन यज्ञों में सात पुरोहित होते थे, जबकि उत्तर वैदिक यज्ञों में 14 पुरोहित होते थे।
- जैन धर्म में देवताओं के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है किंतु उनका स्थान जिन से नीचे रखा गया है।
- जैन धर्म संसार की वास्तविकता को स्वीकार करता है पर सृष्टिकर्ता के रूप में ईश्वर को नहीं स्वीकारता है।
- बौद्ध धर्म की तरह जैन धर्म में वर्ण व्यवस्था की निंदा नहीं की गई है।
- महावीर के अनुसार पूर्व जन्म में अर्जित पुण्य एवं पाप के अनुसार ही किसी का जन्म उच्च अथवा निम्न कुल में होता है।
- जैन धर्म पुनर्जन्म एवं कर्मवाद में विश्वास करता है। उनके अनुसार कर्मफल ही जन्म तथा मृत्यु का कारण है।
- जैन धर्म में मुख्यत: सांसारिक बंधनों से मुक्ति प्राप्त करने के उपाय बताए गए हैं।
- जैन धर्म में अहिंसा पर विशेष बल दिया गया है। इसमें कृषि एवं युद्ध में भाग लेने पर प्रतिबंध लगाया गया है।
- जैन धर्म में युद्ध एवं कृषि-दोनों वर्जित हैं क्योंकि इससे हिंसा होती है।
- स्यादवाद या सप्तमंगीनय जैन धर्म का महत्वपूर्ण दर्शन है, जो ज्ञान की सापेक्षिकता की बात करता है।
- जैन भिक्षुओं के लिए पंच महाव्रत तथा गृहस्थों के लिए पाँच अणुव्रत की व्यवस्था है।
- बौद्ध धर्म ईश्वर और आत्मा में विश्वास नहीं करता। इसलिए इसे अनीश्वरवादी और अनात्मवादी कहा गया है।
- बौद्ध सिद्धांत क्षणभंगवाद के अनुसार सृष्टि नश्वर है।
- जैन धर्म में संलेखना से तात्पर्य है—'उपवास द्वारा शरीर का त्याग।'
- कालांतर में जैन धर्म दो समुदायों में विभाजित हो गया:
  (1) तेरापंथी (श्वेताम्बर)
  (2) समैया (दिगम्बर)
- भद्रबाहु एवं उनके अनुयायियों को दिगम्बर कहा गया। ये दक्षिणी जैनी कहे जाते थे।
- स्थलबाहु एवं उनके अनुयायियों को श्वेताम्बर कहा गया। श्वेताम्बर संप्रदाय के लोगों ने ही सर्वप्रथम महावीर एवं अन्य तीर्थंकरों (पार्श्वनाथ) की पूजा आरंभ की। ये सफेद वस्त्र धारण करते थे।
- महावीर के धर्म उपदेशों का संग्रह इन्हीं पूर्वा में है। इनकी संख्या 14 है तथा इनका संग्रह सम्भूतविजय तथा भद्रबाहु ने किया था।
- जैन धर्म ग्रंथ प्राकृत भाषा में लिखे गए हैं। कुछ ग्रंथों की रचना अपभ्रंश शैली में भी हुई है।
- जैन धर्म ने वेदों की प्रामाणिकता नहीं मानी तथा वेदवाद् का विरोध किया।